विचार बिन्दु

नारी सब कुछ सह सकती है, दारुण से दारुण दुःख, बड़े से बड़ा संकट।
नहीं सह सकती तो अपनी उमंगो का कुचला जाना। –प्रेमचंद

संदर्भ महाराष्ट्र विधान सभा चुनाव परिणाम

महिला मतदाताओं की मुखरता से बदल रही चुनावी नतीजों की तस्वीर

महाराष्ट्र विधान सभा के चुनावों ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनावी नतीजों को बदलने में महिलाओं की प्रमुख भूमिका हो गई है। महाराष्ट्र विधानसभा के चुनावों में महिलाओं के 6 प्रतिशत अधिक मतदान ने चुनावी परिणामों को ही पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। इसी साल की शुरुआत में हुए लोकसभा के चुनाव परिणामों से महाराष्ट्र में कांग्रेस नीत महाअघाडी गठबंधन अतिउत्साह में था और लगभग यह मानकर ही चल रहे थे कि महाराष्ट्र के चुनाव नतीजे उनके पक्ष में ही होंगे। अत्यधिक आत्मविश्वास के चलते चुनावी अभियान को सही दिशा व समझ नहीं बैठा पाएं और इसका परिणाम यह रहा कि भाजपा नीत गठबंधन ने विजय के सारे रेकार्ड तोड़ दिए। माने या ना माने पर इसमें कोई दो राय नहीं कि चुनावी नतीजों को बदलने में महिलाओं की प्रमुख भूमिका रही। मध्यप्रदेश से निकली लाड़ली बहना महाराष्ट्र तक आते आते माझी लाड़की बहना योजना ने महाराष्ट्र सरकार द्वारा इसी साल लागू करने और चुनाव से पहले ही तीन किश्तें लक्षित महिलाओं के खातों में जाने से पूरा माहौल ही बदल गया। योजना शुरु करने पर विपक्ष ने विरोध किया और यहां तक कि कोर्ट में जनहित याचिकाएं लगाई गई पर कोर्ट द्वारा योजना को सही ठहराने और सीधे खाते में पैसे आने से महिलाओं में सरकार के प्रति विश्वास जगा वहीं महाअघाडी गठबंधन महिलाओं से जुड़ी इस योजना को समझने में ही देरी कर दी और भले ही बाद में चुनाव घोषणा पत्र या यों कहे कि चुनावी वादों में अधिक पैसा देने का वादा भी किया पर महिलाओं का विश्वास नहीं जीत पाएं। परिणाम सामने हैं जो मिल रहा है वह बढ़कर मिलेगा इस पर महिलाओं ने अधिक विश्वास जताया। सही मायने में देखा जाए तो महिला शक्ति गेम चेंजर बन कर सामने आई। कहा तो यहां तक जाने लगा है कि महिलाएं जिनके साथ है सत्ता भी उनके हाथ ही लगेगी।

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में चुनावों में महिलाओं की बढ़ती सक्रिय भागीदारी तारीफे काबिल है। गत चुनावों चाहे वे लोकसभा के हों या राज्यों की विधानसभाओं के देश की महिला वोटरों ने नई सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मजे की बात यह भी है कि चुनाव में पुरुष मतदाताओं की तुलना में महिला मतदाताओं ने अधिक मुखर होकर मतदान किया है। अब तो यह माना जाने लगा है कि देश के एक दर्जन के करीब राज्यों में महिलाओं के वोट ही नई सरकार के गठन में बड़ी भूमिका निभाने लगे हैं। तस्वीर का सकारात्मक पक्ष यह भी है कि मतदान ही नहीं चुनावों में सक्रियता से हिस्सा लेने और चुनावों में उम्मीद्वारी जताने में भी महिलाएं आगे आई हैं। देश के पहले और दूसरे लोकसभा के आमचुनावों में जहां 22 महिला सांसद चुन कर आई थी वहीं गत 2024 के आमचुनाव में 74 महिला सांसद चुन कर आई। हांलाकि आधी आबादी को मुख्य धारा में लाने के लिए राजनीतिक दलों द्वारा नए नए सब्जबाग दिखाने के बावजूद टिकट वितरण के समय महिलाओं की हिस्सेदारी कम ही रह जाती है। अनुभव तो यही बताता है कि किसी भी राजनीतिक दल द्वारा आधी तो दूर की बात एक तिहाई सीटों पर भी महिलाओं को टिकट नहीं दिए जाते है। इस बार महाराष्ट्र चुनावों में 50 महिलाओं को टिकट दिए गए और 21 महिलाएं चुनाव जीत कर विधायक बनी है।

> **विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में चुनावों में महिलाओं की बढ़ती सक्रिय भागीदारी तारीफे काबिल है। गत चुनावों चाहे वे लोकसभा के हों या राज्यों की विधानसभाओं के देश की महिला वोटरों ने नई सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मजे की बात यह भी है कि चुनाव में पुरुष मतदाताओं की तुलना में महिला मतदाताओं ने अधिक मुखर होकर मतदान किया है।**

सबसे अच्छी बात यह है कि गॉव हो या शहर महिलाएं अब घर की चार दीवारी में कैद रहने वाली या पुरुष के कहे अनुसार मतदान करने वाली नहीं रही है। पुरुषों के हां में हां मिलाने वाली स्थिति से बहुत बाहर आ चुकी है आज देश की महिलाएं। संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया में महिलाएं सक्रियता से हिस्सा लेने लगी हैं। चुनावों में उम्मीद्वारी भी जताती है तो चुनाव केंपेन के दौरान अपनी उपस्थिति भी दर्ज कराती है। दूसरी और मतदान में भी आगे आकर हिस्सा लेने लगी है। देखा जाए तो महिलाओं ने जिस दल पर अधिक भरोसा जताया या यों कहे कि जिस दल को अधिक मत दिए उसी दल की सरकार बनी। मजे की बात यह है कि अब सभी राजनीतिक दल महिला मतदाताओं को अपने पक्ष में लाने के हर संभव प्रयास में जुटे हैं। यही कारण है कि महिलाओं को लुभाने वाली योजनाएं और कार्यक्रम ना केवल घोषित किये जा रहे हैं अपितु राजनीतिक दलों के आने वाले चुनाव घोषणा पत्रों में महिला मतदाताओं को लुभाने के हर संभव प्रयास किए जाते हैं। क्योंकि एक बात साफ हो चुकी है कि आज की महिला स्वयं निर्णय लेने में सक्षम है और उसकों दबाव या अन्य तरीके से प्रभावित नहीं किया जा सकता। कम से कम चुनावों के परिणाम तो इसी और इंगित कर रहे हैं। मजे की बात यह है कि माझी लड़की बहना योजना में 2.50 लाख आय वाली 18 से 60 साल की महिलाओं को इस योजना से जोड़ा गया। इससे यह साफ हो जाता है कि यह वर्ग कमजोर आर्थिक आय वाली महिलाओं का है। यहां साफ हो जाता है कि महिलाओं का यह वर्ग वो वर्ग है जिसके बारें में यह माना जाता है कि इस वर्ग में महिलाएं पुरुषों के निर्णयों पर अधिक निर्भर होती है पर महाराष्ट्र और अन्य प्रदेशों के चुनावी नतीजों से यह साफ हो गया है कि महिलाएं पुरुषों की हां में हां ना मिलाकर स्वयं निर्णय लेने लगी है और उसीसे ताजा नतीजें रुबरु कराते हैं।

खैर यह अलग बात है, पर यह साफ हो चुका है कि देश के लोकतंत्र के इस महापर्व में महिलाएं अग्रणी भूमिका निभाने जा रही है। अब महिला मतदाताओं को कमतर नहीं आंका जा सकता। महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी इसे शुभ संकेत माना जा सकता है। इसे देश और लोकतंत्र दोनों के लिए ही सकारात्मक प्रयास कहा जा सकता है तो दूसरी और दुनिया के देशों के लिए भी भारत की महिलाएं एक मिसाल बन कर सामने आ रही हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए कि भविष्य के चुनावों में भी राजनीतिक दलों को सत्ता का स्वाद चखना है तो निगाहें महिला मतदाताओं की और रखनी ही होगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 28 नवम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र प्रातः 7:36 तक, सौभाग्य योग सायं 4:01 तक, गर करण सायं 7:32 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–तुला, मंगल–कर्क, बुध–वृश्चिक, गुरू–वृष, शुक्र–धनु, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज प्रदोष व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:19 तक, चर 10:56 से 12:15 तक, लाभ–अमृत 12:15 से 2:52 तक, शुभ 4:10 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:00, सूर्यास्त 5:29

मेष
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

कर्क
घर/परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में आपसी अनबन हो सकती है। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

सिंह
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

उच्च शिक्षा – स्ववित्तीय पोषित शिक्षकों की व्यथा

प्रो. अशोक कुमार

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तित्व के समग्र विकास एवं राष्ट्र के नागरिक तैयार करने में किसी भी देश में शिक्षा की अहम भूमिका है। शिक्षा संरचना, पाठयक्रम–पाठयचर्या गुणात्मकता, सुलभता तथा देश की संस्कृति के अनुरूप शिक्षा आदि विषयों पर सार्वजनिक चर्चा होती रही है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है और इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल ज्ञान देते हैं बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का विकास भी करते हैं। जब पूरी दुनिया ने विद्यालय की कल्पना नहीं की थी, उस समय हमारे यहाँ विश्वस्तरीय नालंदा विश्वविद्यालय, तक्षिशला विश्वविद्यालय, और विक्रमशिला विश्वविद्यालय हुआ करते थे। परंतु वर्तमान मे शिक्षा–व्यवस्था की विसंगतियाँ कहीं–न–कहीं बहुत कचोटती है ।

भारत की स्वतंत्रता के बाद, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विस्तार हुआ और इसी दौरान स्व–वित्तपोषित शैक्षिणक संस्थानों का उदय हुआ। इन संस्थानों ने उच्च शिक्षा के अवसरों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1980 और 90 के दशक में निजीकरण और उदारीकरण की नीतियों के कारण स्व–वित्तपोषित शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। सरकारी महाविद्यालयों में सीमित सीटों के कारण, सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिल पाता था । सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहित किया, जिसके परिणामस्वरूप कई नए स्ववित्तीय पोषित शिक्षण संस्थान स्थापित हुए। स्ववित्तीय पोषित शिक्षण संस्थान वे संस्थान होते हैं जो सरकार से सीधी आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं करते हैं। ये संस्थान अपने खर्चों को पूरा करने के लिए विभिन्न स्त्रोतों जैसे कि फीस, दान, और अन्य आय के माध्यम से धन जुटाते हैं। 21वीं सदी में उच्च शिक्षा के प्रति बढ़ती मांग के कारण स्व–वित्तपोषित शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में और वृद्धि हुई। शिक्षा में निजीकरण के उदय के साथ इस विचार ने महत्वपूर्ण गति प्राप्त की, विशेष रूप से भारत में, जहां सरकार ने निजी विश्वविद्यालयों को स्व–वित्तपोषित आधार पर संचालित करने की अनुमति देनी शुरू कर दी, जिसका अनिवार्य रूप से अर्थ था कि वे संचालन को बनाए रखने के लिए पर्याप्त सरकारी धन के बजाय छात्र शुल्क पर निर्भर रहेंगे । स्ववित्तीय पोषित शिक्षण संस्थानों के विभिन्न प्रकार है जैसे निजी विश्वविद्यालयः ये विश्वविद्यालय पूरी तरह से निजी धन पर चलते हैं। वे अपनी स्वयं की पाठ्यक्रम, फीस संरचना और प्रवेश मानदंड निर्धारित करते हैं। डीम्ड विश्वविद्यालयः ये विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त होते हैं और उन्हें विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाता है। वे स्वायत्त होते हैं और अपनी नीतियां स्वयं बना सकते हैं। कॉलेजः ये संस्थान विश्वविद्यालयों से संबद्ध होते हैं और स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। संस्थानः ये संस्थान किसी विशेष विषय या क्षेत्र में विशेषज्ञता रखते हैं। उदाहरण के लिए, मेडिकल संस्थान , प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रबंधन संस्थान आदि। इन स्ववित्तीय पोषित शिक्षण संस्थानों ने विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों की पेशकश शुरू की, जिससे छात्रों के पास अधिक विकल्प उपलब्ध हुए। सरकार की नई शिक्षा नीतियों ने निजी क्षेत्र को शिक्षा के क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित किया। बढ़ती जनसंख्या और शिक्षा के प्रति जागरूकताः बढ़ती जनसंख्या और शिक्षा के प्रति जागरूकता के कारण उच्च शिक्षा की मांग में वृद्धि हुई।

वर्तमान मे (2021–22) की रिपोर्ट के आधार पर पंजीकृत 1168 विश्वविद्यालयों में से 685 सरकारी प्रबंधन वाले हैं 10 निजी डीम्ड और 473 निजी हैं। पंजीकृत कॉलेज 45473 हैं। महाविद्यालयों में से 21.5 प्रतिशत कॉलेज सरकारी कॉलेज हैं, 13.2 प्रतिशत निजी (सहायता प्राप्त) हैं और 65.3 निजी (गैर–सहायता प्राप्त) हैं। सरकारी कॉलेज कुल महाविद्यालयों का 21.5 प्रतिशत हिस्सा हैं, 13.3 प्रतिशत निजी (सहायता प्राप्त) कॉलेज हैं, है, जबकि 65.2 प्रतिशत निजी (गैर–सहायता प्राप्त) कॉलेज हैं, जिनमें छात्रों का कुल नामांकन का केवल 44.6 प्रतिशत है।

आज एक बहुत ही मुख्य विषय है कि क्या शिक्षा के लिए जो शिक्षण संस्थान खुले जा रहे हैं विशेष तौर से निजी क्षेत्रों में क्या यह शिक्षा के लिए खुले जा रहे हैं या व्यवसाय के लिए खोले जा रहे हैं यह बहुत ही गंभीर विषय है इस पर गहन चिंतन की आवश्यकता है ! निजी कॉलेज क्यों तेजी से बढ़ रहे हैं, क्योंकि उन्हें तेजी से बढ़ने दिया गया है। ऐसे अधिकांश संस्थान वास्तव में शैक्षिणक संस्थानों की आड़ में रियल एस्टेट रैकेट हैं। उनमें से अधिकांश राजनेताओं और बिल्डरों द्वारा नियंत्रित हैं। किसी बड़े शहर में विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए भूमि की आवश्यकता नए खिलाड़ियों के लिए एक बड़ी बाधा की तरह लगती है, जिनके पास बहुत अधिक धन या राजनीतिक संबंध नहीं होते। यह निजी शिक्षा क्षेत्र पर पर्याप्त संसाधनों वाले व्यक्तियों, अक्सर राजनेताओं द्वारा एकाधिकार करने में योगदान देता है।

एक और भी प्रश्न मन में आता है की शिक्षा के क्षेत्र में निजी करण से वास्तविक लाभ किसको है – सरकार को है या छात्रों को है या प्रबंधकों को है ! उच्च शिक्षा की गुणवत्ता दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है। डिग्री महाविद्यालयों के स्ववित्तपोषित शिक्षक अत्यधिक निराश महसूस कर रहे हैं अधिकांश मामलों में हमारे पास सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में भी उचित योग्य शिक्षक नहीं हैं। शिक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, केंद्रीय विश्वविद्यालयों में कुल 6,549 फैकल्टी के पद खाली हैं। उनमें से अधिकांश दिल्ली विश्वविद्यालय में हैं, जहां 900 रिक्त पद हैं, इसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 622 पद, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में 532 पद और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में 498 पद और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 326 रिक्त संकाय पद हैं। विकसित देश में शिक्षा का भविष्य अस्थायी शिक्षकों के सहारे पर निर्भर है जिनको विभिन्न नाम से जाना जाता है । अस्थायी, एडहॉक, संविदा, पार्टटाइमर, अतिथि, मानद, विजिटिंग, आवश्यकता आधारित, एमओयू प्रोफेसर, शोध विद्वान, ऑनलाइन अतिथि संकाय, स्व अध्ययन। विदेश मेंः प्रतिस्थापन, सत्रीय, सहायक शिक्षक। शिक्षा का विकास सिर्फ कॉलेज खोलने से नहीं होता ! सरकार ने अब तक समय में नए कॉलेज खोलकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है लेकिन क्या स्थिति वाकई ऐसी है कि उस पर गर्व किया जाए? क्या केवल कॉलेज विश्वविद्यालय खोल देने से ही उन लक्ष्यों की प्राप्ति हो जाती है जिनके लिए उन्हें खोला जाता है ? काश ऐसा होता जब हम इन उच्च शिक्षण संस्थाओं के यथार्थ से परिचित होने का प्रयास करते हैं तो जो तस्वीर उभरती है वह न केवल निराश करती है बल्कि अपनी नीति निर्माताओं के प्रति नाराजगी भी उठ जाती है! शिक्षण संस्थाओं के लिए आधारभूत ढांचा जिसमें इमारत व अन्य सुविधाएं शामिल है, पर्याप्त शिक्षक एवं सहायक कर्मचारी सक्षम नियंत्रण तंत्र की जरूरत होती है ! हालत यह है जो कॉलेज नए खोले गए हैं उनमें से ज्यादा के पास खुद की जमीन तक नहीं है और किराए के भवनों में चल रहे हैं । बहुत सारे कॉलेज तो प्राइमरी स्कूलों के भवन में चल रहे हैं ! अनेक महाविद्यालयों में ना प्रयोगशाला, ना पुस्तकालय और ना विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त कमरे और फर्नीचर हैं । यह एक कटु यथार्थ है । क्या यह शिक्षा साधन सुविधा विहीन कॉलेज व विश्वविद्यालय उस उद्देश्य की पूर्ति करने में पूरी तरह सक्षम है जिनके लिए उन्हें स्थापित किया गया है ? बिना शिक्षक, बिना पुस्तकालय, बिना प्रयोगशाला के कैसी पढ़ाई हो सकती है ! बहुत दुख की बात है की कई प्रदेश में एक ही शिक्षक कई महाविद्यालयों में कार्यरत दिखाया गया है ! निजी संस्थान में शिक्षकों का शोषण होता है। न्यूनतम शिक्षक और छात्रों का अधिकतम नामांकन। सेल्फ फाइनेंस संस्थानों में शिक्षकों की स्थिति काफी दयनीय है। कई राज्यों में स्व–वित्तपोषण संस्थानों के लिए कोई अधिनियम, परिनियंवली नहीं है। निजी विश्वविद्यालयों और स्व–वित्तपोषण संस्थानों में यह प्रावधान है कि शिक्षण और गैर–शिक्षण कर्मचारियों की सभी नियुक्तियाँ यूजीसी मानदंडोंः के अनुसार की जाएंगी लेकिन वेतनमान सरकार द्वारा विनियमित की जाएंगा । स्व–वित्तपोषण संस्थानों, मेडिकल और इंजीनियरिंग महाविद्यालयों में भी शिक्षकों, के वेतन को लेकर लंबे समय से असंतोष व्याप्त रहा है। इन संस्थानों में शिक्षकों को अक्सर सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में काफी कम वेतन दिया जाता है। सेल्फ फाइनेंस डिग्री महाविद्यालयों में शिक्षकों का मासिक वेतन 5–5 हजार रुपये है (मेडिकल और इंजीन्यरिंग को छोड़ कर)। इन शिक्षकों से ज्यादा एक दिन की दिहाड़ी 600 रुपये तो मजदूर पाता है। अगर औसत निकाला जाए तो अधिकतम वेतन 10 से 12 हजार रुपये तक है। ये स्थिति तब है जबकि विश्विविद्यालय अनुदान आयोग नियमित शिक्षकों के जितना वेतन इन्हें भी देने को कहती है। उच्च शिक्षा मे इतिहास, हिंदी जैसे विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षकों का वेतन तो और भी कम है। इन विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षकों को पांच–पांच हजार रुपये तक का वेतन दिया जाता है। इस पर भी साल में सिर्फ 11 महीनों का वेतन मिलता है। यह समस्या कई कारणों से जटिल है ! ये संस्थान सरकार से स्वायत्त होते हैं, जिसके कारण वे अपने कर्मचारियों को वेतन देने के लिए स्वयं जिम्मेदार होते हैं। इन संस्थानों में फीस संरचना मे बहुत अंतर है । भारत में कई निजी विश्वविद्यालय हैं जो लाखों (5–30 लाख तक) में ट्यूशन फीस के साथ स्नातक कार्यक्रम प्रदान करते हैं उदाहरण के लिए मणिपाल एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन, अमृता विश्व विद्यापीठम, अमृता विश्व विद्यापीठम, वीआईटी यूनिवर्सिटी, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, अशोका यूनिवर्सिटी , इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस एंड फाइनेंस, वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (वीआईटी):, एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजीः, लेकिन विभिन्न राज्यों मे स्ववित्त पोषित डिग्री महाविद्यालयों में बीएससी, बीकॉम का शिक्षण शुल्क राज्य सरकार द्वारा सुनिश्चित सिर्फ 5000 – 6000 रुपए वार्षिक है । छात्रों द्वारा ली गई शिक्षण फीस पूरी तरह से शिक्षकों के वेतन पर खर्च नहीं होती है। शिक्षकों की भर्ती के लिए बाजार में प्रतिस्पर्धा बहुत अधिक होती है, जिसका फायदा उठाकर संस्थान कम वेतन पर शिक्षकों की भर्ती करते हैं। भारत में मेडिकल और इंजीनियरिंग शिक्षा के क्षेत्र में भी स्ववित्तीय पोषित संस्थानों का तेजी से विस्तार हुआ है। ये संस्थान आमतौर पर उच्च फीस लेते हैं और दावा करते हैं कि वे उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करते हैं। हालांकि, इन संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को भी अक्सर वेतन के मामले में शोषण का सामना करना पडता है। यह समस्या न केवल शिक्षकों के लिए चिंता का विषय है बल्कि छात्रों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार के लिए भी खतरा है। समस्या का मूल कारण लागत वसूली का दबाव है । स्ववित्तीय पोषित संस्थानों पर उच्च लागत वसूली का दबाव होता है। वे अपनी बुनियादी सुविधाओं, कर्मचारियों के वेतन और अन्य खर्चों को पूरा करने के लिए अधिक से अधिक फीस वसूल करते हैं। इस दबाव में वे अक्सर शिक्षकों के वेतन पर कंजूसी करते हैं । यही नहीं बहुत से महाविद्यालयों में अनुमोदित शिक्षकों की जगह किसी और से काम लिया जाता है। शिक्षक–प्राचार्य नियमित तौर पर उपस्थित नहीं रहते और पढ़ाई की गुणवत्ता पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता है। इक्का–दुक्का महाविद्यालयों को छोड़कर ज्यादातर की यही स्थिति है। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की आय का एकमात्र जरिया फीस ही है इसलिए इसे बढ़ाने के अलावा उच्च शिक्षा की दशा और दिशा सुधारने का दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

कई निजी महाविद्यालयों का तर्क है कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में कॉलेज की आय उतनी नहीं हो पाती है। वहीं यूजीसी की योग्यता के शिक्षक नहीं मिल पाते। संस्थान कम वेतन पर शिक्षकों की भर्ती करते हैं। कम वेतन के कारण योग्य शिक्षक इन संस्थानों में काम करने से हिचकिचाते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है। कम वेतन और असुरक्षित कार्य वातावरण के कारण योग्य शिक्षक इन संस्थानों को छोडकर अन्य जगहों पर रोजगार की तलाश करते हैं। योग्य शिक्षकों की कमी से शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आती है। छात्रों को कम गुणवत्ता वाली शिक्षा मिलती है और उन्हें उच्च फीस देनी पड़ती है। कम गुणवत्ता वाले शिक्षक, डॉक्टर और इंजीनियरों का उत्पादन होने से समाज को नुकसान होता है। इन संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को अक्सर सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षकों की तरह सुरक्षा और अधिकार प्राप्त नहीं होते हैं। वेतन, कार्यकाल और पदोन्नति के मामले में वे संस्थान प्रबंधन के दया पर निर्भर रहते हैं। कई विश्वविद्यालयों ने अपने परिसर के स्ववितपोषित शिक्षकों को एक अच्छा वेतन एवं अन्य सुविधाओं देने की माँग को स्वीकार कर लिया है लेकिन विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षकों के वेतन में कोई बदलाव नहीं किया गया है । कई संस्थान शिक्षकों पर विभिन्न प्रकार की पाबंदियां लगाते हैं जैसे कि अनुपस्थिति के लिए जुर्माना, लक्ष्य पूरे नहीं करने पर वेतन काटा जाना आदि। इसको लेकर कई बार विभिन्न प्रदेशों मे सरकार तक शिकायतें की गईं. लेकिन, कोई बदलाव नहीं आया क्योंकि सूत्रों के अनुसार ज्यादातर शिक्षण संस्थान नेता, मंत्री, विधायक और अधिकारियों के संपर्क मे या उनका इन संस्थानो से सीधे या अप्रता अप्रात्क्ष रूप से जुड़े हैं। ऐसे में वह भी इनमें बदलाव नहीं चाहते हैं ।

स्ववित्तीय पोषित डिग्री महाविद्यालय, मेडिकल और इंजीनियरिंग महाविद्यालयों में शिक्षकों के वेतन की समस्या के समाधान के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं । सरकार को इन संस्थानों में शिक्षकों के वेतन को लेकर स्पष्ट दिशानिर्देश जारी करने चाहिए। संस्थानों को अपने वित्तीय विवरणों को सार्वजनिक करना चाहिए ताकि शिक्षक यह जान सकें कि संस्थान कितना मुनाफा कमा रहा है और शिक्षकों के वेतन पर कितना खर्च हो रहा है। संस्थानों को अपनी वित्तीय स्थिति और फीस संरचना के बारे में पूरी तरह से पारदर्शी होना चाहिए। शिक्षकों को कर्मचारी संघों का गठन करके अपनी आवाज को मजबूत बनाना चाहिए। शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें। छात्रों को भी इस मुद्दे के प्रति जागरूक होना चाहिए और शिक्षकों के अधिकारों के लिए आवाज उठानी चाहिए। सरकार, संस्थान, शिक्षक और छात्र सभी को इस समस्या के समाधान के लिए अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

– प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
विभागाध्यक्ष राजस्थान
विश्वविद्यालय

"बाल विवाह मुक्त भारत" अभियान को राजस्थान महिला कल्याण मण्डल का समर्थन

अजमेर (कासं)। भारत सरकार की ओर से नई दिल्ली में बाल विवाह मुक्त भारत अभियान की शुरुआत के बाद जिला प्रशासन ने राजस्थान महिला कल्याण मण्डल के सहयोग से रैलियों व शपथ ग्रहण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इस मौके पर जिला कलेक्ट्रेट अजमेर में हुए समारोह में अतिरिक्त जिला कलेक्टर गजेन्द्र सिंह राठौड़ एवं जिला बाल संरक्षण ईकाई के सहायक निदेशक संजय सांवलानी ने बाल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं एवं पदाधिकारियों को बाल विवाह के विरूद्ध शपथ दिलाई, साथ ही संस्था मुख्यालय चाचियावास में संयुक्त निदेशक अनुराग सक्सेना, अतिरिक्त निदेशक तरूण शर्मा, लेखाधिकारी नेमीचन्द वैष्णव, सागर कॉलेज के इन्चार्ज डॉ. भगवान सहाय शर्मा की उपस्थिति में उपनिदेशक नानूलाल प्रजापति ने कॉलेज के छात्र–छात्राओं सहित स्टाफ को बाल विवाह मुक्त अजमेर के लिए शपथ दिलाते हुए बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 की जानकारी दी । राजस्थान महिला कल्याण मण्डल बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए काम कर रहे 250 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठनों के देशव्यापी गठबंधन 'जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन' का सहयोगी संगठन है जो कि राजस्थान के 6 जिलों में बाल विवाह की रोकथाम एवं जागरूकता के लिए पिछले 3 वर्ष से कार्य कर रहा है। भारत सरकार के नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान के उद्घाटन के मौके पर संस्था ने अपने कार्यक्षेत्र के अजमेर, नागौर, बीकानेर, चुरू, झुन्झुनू, तथा डीडवाना–कुचामन जिलों जागरूकता रैलियों का आयोजन किया और लोगों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाई। संस्था टीम ने जिले के 50 से अधिक गॉवों में स्कूली बच्चों, महिलाओं और पंचायत प्रतिनिधियों व अन्य को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाई। जिले में जगह–जगह हुए कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में ग्रामीणों, पंचायत प्रतिनिधियों, आशा व आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, बाल विवाह निषेध अधिकारी (सीएमपीओ) के अलावा बाल विवाह पीड़िताओं ने भी भागीदारी की और बाल विवाह के खिलाफ शपथ ली। यह कार्यक्रम देश से बाल विवाह के खात्मे के लिए भारत सरकार के बाल विवाह मुक्त भारत' के आव्हान के समर्थन में किया गया, जिसका उद्घाटन 27 नवंबर को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने किया। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने पंचायतों और स्कूलों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाई। उम्मीद की जा रही है कि जल्दी ही शपथ लेने वालों की संख्या 25 करोड़ तक पहुंच जाएगी । इस मौके पर बाल विवाहों की सूचना व शिकायत के लिए एक राष्ट्रीय पोर्टल भी शुरू किया गया। इस राष्ट्रव्यापी अभियान और जमीन पर इसके असर की चर्चा करते हुए संस्था के निदेशक राकेश कुमार कौशिक ने कहा, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बाल विवाह के खात्मे के लिए महिला एवं बाल कल्याण मंत्रालय की ओर से शुरू किया गया अभियान इस बात का सबूत है कि सरकार इस सामाजिक बुराई की गंभीरता से अवगत है। अभियान की विभिन्न गतिविधियों को संचालित करने में संस्था टीम के दीपक जोरम, सत्तार मोहम्मद, ज्योति मण्डरावलिया, योगिता गौड़ ने सहयोग किया।

कोटा के प्रत्यक्ष ने सबसे कम उम्र के योग टीचर का विश्व रिकॉर्ड बनाया

कोटा में रहने वाले प्रत्यक्ष ने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है ।

कोटा, (निसं)। जिस उम्र में बच्चों को योग के नाम भी नहीं आते उस उम्र का एक योग टीचर कोटा में रहता है। वह कई बच्चों और बड़ी उम्र के लोगों को ट्रेनिंग दे रहा है।

इस योग टीचर के नाम अब विश्व रिकॉर्ड भी जुड़ गया है। यह उपलब्धि उन्हें अक्टूबर 2024 में ही मिला है। जिसके बाद प्रत्यक्ष ने विश्व के सबसे छोटे (कम उम्र) के योग टीचर होने का रिकॉर्ड बना लिया है। उन्हें गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने पूरी प्रक्रिया के बाद सर्टिफिकेट दिया है। इस सर्टिफिकेट और रिकॉर्ड के लिए उन्होंने लंबी मेहनत की है। प्रत्यक्ष बोरखेड़ा स्थित देवाशीष सिटी में अपने परिवार के साथ रहते हैं और यह सबकुछ उन्होंने अपनी मां दीक्षा विजय से ही सीखा है। इसके बाद प्रोफेशनल योग क्लास लिए और सिखाने लग गए हैं। प्रत्यक्ष के पिता गौरव विजय का कहना है कि सबसे कम उम्र के योगा टीचर बनने यह रिकॉर्ड उनके बेटे ने 6 साल की उम्र में ही बना लिया जबकि 4 साल की उम्र से वह योग सीखने लग गया था, 5 साल की उम्र में सिखाने भी लग गया था। फिलहाल, प्रत्यक्ष की उम्र 7 साल है। रिकॉर्ड के लिए उन्होंने बीते साल अप्लाई किया था। इससे पहले यह रिकॉर्ड दुबई की एक लड़की के नाम था। वह साढ़े सात साल की थी। प्रत्यक्ष का कहना है कि बच्चों को स्मार्टफोन से दूर रहना चाहिए। वह खुद स्मार्टफोन का उपयोग नहीं करते हैं। अपनी मां और पिता के फोन को नहीं छूते हैं। केवल बात करने के लिए ही फोन लेते हैं। अन्य बच्चों की तरह गेम्स और कार्टून का शौक उन्हें नहीं है। कुछ देर टेलीविजन जरूर देखते हैं। सबसे छोटे योग गुरु का खिताब लेने के बाद उनकी इच्छा है कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करें। साथ ही जंक फूड से बच्चों को दूर रहने की सलाह देते हैं।